अगस्त माह की साधनायें

महाकाली जयंती पर काम कला काली महाविद्या साधना

इस कलियुग में केवल काम कला काली महाविद्या साधना ही है जो शीघ्र फल देती है तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाली देवी है।

उक्त साधना महाकाली जयंती पर जो कि दिनांक 15 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 03 पर अंकित है।

जन्माष्टमी पर कृष्ण कलाओं को जीवन में उतारने की अनूठी साधनायें

जन्माष्टमी के दिन कृष्ण पूजन सामान्य विधि से तो सभी करते है, लेकिन मांत्रोक्त विशेष साधना करने से कार्य में विशेष सफलता प्राप्त होती है।

उक्त साधनायें जन्माष्टमी पर जो कि दिनांक 15 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 11 पर अंकित है।

हरितालिका तीज पर गृहस्थ सुख काम्य प्रयोग

इस प्रयोग द्वारा आपके गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुख, शान्ति, माधुर्य एवं सम्पन्नता आ जाती है।

उक्त साधना हरितालिका तीज पर जो कि दिनांक 26 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 03 पर अंकित है।

गणपति अभ्युदय पर्व पर उच्छिष्ट गणपति

ऋग्वेद में लिखा है 'न ऋते त्वम क्रियते कि चनारे' अर्थात् हे गणेश जी ! तुम्हारे बिना कोई भी कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता है।

उक्त साधना गणपति अभ्युदय पर्व पर जो कि दिनांक 27 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 14 व 15 पर अंकित है।

ऋषि पंचमी पर काल बन्धन साधना

इस प्रयोग को सम्पन्न करने से व्यक्ति काल की गति को समझने लगता है तथा काल को पूर्णता के साथ बांधने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है।

उक्त साधना ऋषि पंचमी पर जो कि दिनांक 28 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 03 पर अंकित है।

ललिता सप्तमी पर अष्ट शक्ति सिद्धिदा ललिताम्बा साधना

इस ललिताम्बा साधना मात्र भगवती की साधना नहीं है अपितु उनके आठों शक्ति स्वरूप की भी साधना है, जो साधक को रक्षात्मक, रोगनिवारक, शत्रुनिवारक, धनप्रदायक रूप में प्राप्त होती है,

उक्त साधना ललिता सप्तमी पर जो कि दिनांक 30 अगस्त 2025 को सम्पन्न करे, साधना प्रक्रिया अगस्त की पत्रिका के पृष्ठ संख्या 03 पर अंकित है।

अगस्त मास की दीक्षायें

गणपति अवतरण पर्व — 27 अगस्त

सर्व विघ्नैकरहरण सर्वकामनाफलप्रद अनन्तानन्तसुखद सुमंगलमंगल गणपति लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा

कलियुग में **गणपति** शीघ्र **सफलतादायक देवता** माने गये हैं। **भगवान श्री गणपति** प्रत्येक दशा में, प्रत्येक काल में **सर्वपूज्य,** सर्व प्रकारेण **मंगलदायक** कहे गये हैं। वर्ष के बारह महीनों में इनकी विभिन्न रूपों में **पूजा-साधना** करने का **विधान** रचा गया है।

सृष्टि की **उत्पत्ति, स्थिति** और **पूर्णता ब्रह्मा, विष्णु** और **महेश** द्वारा **सम्पादित** की जाती है, लेकिन **सृष्टि की उत्पत्ति** के साथ ही यह व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहे, और **विघ्न** न आये-यह **गणेश** के ही जिम्मे है, **आसुरी प्रकृति** के **अभक्तों** के लिये गणेश **विघ्नकर्ता** हैं, तो उनकी **पूजा-उपासना** करने वाले भक्तों के लिए **विघ्नहर्ता** और **ऋद्धि-सिद्धि** के **प्रदाता** हैं, इसीलिये श्री गणेश को **'सर्व विघ्नैकरहरण, सर्वकामनाफलप्रद, अनन्तानन्तसुखद** और **सुमंगलमंगल'** कहा गया है।

जीवन की समस्त **विघ्न-बाधाओं** को **पूर्णता** से समाप्त करने के लिये, उनको **स्थायी** रूप से अपने जीवन से अलग रखने कि लिये **मंगलमूर्ति भगवान श्री गणपति** की **आराधना** सम्पन्न की जाती है, जिससे जीवन को **निश्चिंतता** प्राप्त होती है। उनकी **विघ्न-विनाशक शक्ति** के कारण उन्हें **घर** और **पूजन** में **सर्वोच्च स्थान** प्राप्त है।

भगवान श्री गणपति तो अपने भक्तों के लिये **विघ्नहर्ता** और **दुष्टों** के लिये **विघ्नकर्ता** दोनों ही रूप में **वन्दनीय** हैं। भगवान गणपति की कृपा प्राप्त कर साधक **वाद विवाद, मुकदमा, राजकीय बाधा, लड़ाई, शत्रु-बाधा, भय-नाश** इत्यादि कार्यों से **मुक्ति** व जीवन में विभिन्न **मनोकामनाओं की पूर्णता,** अपने घर में **धन-धान्य** तथा **शक्ति प्राप्त** कर दूसरों को **आकर्षित** एवं **वशीभूत** करने हेतु व साथ ही **लक्ष्मी, धन, सुन्दर पत्नी प्राप्ति, शक्ति** एवं **कार्य सिद्धि** हेतु यह **गणपति अभ्युदय पर्व** पर **सद्गुरूदेव जी विशिष्ट साधना-पूजा** सम्पन्न कर **दीक्षा** प्रदान करेंगे।

सर्व विघ्नैकरहरण सर्वकामनाफलप्रद अनन्तानन्तसुखद सुमंगलमंगल गणपति लक्ष्मी प्राप्ति दीक्षा

न्यौछावर ₹1800/-

ललिता सप्तमी — 30 अगस्त

श्री युक्त त्रिपुराम्बा नव शक्ति चेतना प्राप्ति दीक्षा

आज के **युग** में प्रत्येक व्यक्ति **सौन्दर्य युक्त, प्रभाव युक्त, शक्तिशाली** एवं **अद्वितीय जीवन** जीना चाहता है और इसके लिये **भरसक प्रयत्न** भी करता है, किन्तु अपने आप को **असफल** एवं **असमर्थ** ही पाता है और इस **असमर्थता** को दूर करने के लिये वह कोई भी **मार्ग** और **कोई भी उपाय** करने के लिए **तत्पर** रहता है, ऐसे **क्षणों** में यदि **सही मार्ग** प्रशस्त हो जाए, तो वह अपने जीवन के उन **अभावों** को दूर कर **पूर्ण जीवन** जीने का अधिकारी हो जाता है और उसी **पूर्ण जीवन** की **सृष्टि** वह कर सकता है

श्री के **नौ आवरणों** में रहस्य निहित है, **श्री** के सभी **भावों** का जो **ललिता, त्रिपुर सुन्दरी, त्रिपुर वासिनी, त्रिपुर मालिनी, त्रिपुराम्बा, त्रिपुरासिद्धा, त्रिपुराक्षी, त्रिपुरभेदनी** एवं **त्रिपुरेशी** कहलाती है। जो **पराम्बा** की **नौ विशिष्ट शक्तियों** के नाम हैं। ये **शक्तियां** मनुष्य के **सम्पूर्ण जीवन** से **पूर्ण तादात्मय** रखती हैं। **श्री का तात्पर्य श्रेष्ठता है** अर्थात् जो **श्री सम्पन्न है,** वही सभी **श्रेष्ठताओं** से युक्त हो सकता है। चाहे जीवन की **भौतिक श्रेष्ठता** हो या **आध्यात्मिक श्री शक्ति** से ही जीवन में **श्रेष्ठमय सुस्थितियों** का **निर्माण** होता है।

अतः **ललिता सप्तमी** के **चैतन्य दिवस पर्व सद्गुरूदेव जी** प्रत्येक **साधक** हेतु **साधना, पूजा, मंत्र-जप** सम्पन्न कर **श्री युक्त त्रिपुराम्बा नव शक्ति चेतना प्राप्ति दीक्षा** प्रदान करेंगे। जिसके फलस्वरूप **साधक** इन्हीं **नौ स्वरूपों** का तादात्मय अपनी देह से कर लेता है या ऐसा कहें कि विविध शक्ति स्वरूपों को **समाहित** कर **श्री सम्पन्न** बन जाता है। जिसके पश्चात् जीवन में किसी प्रकार की कोई **न्यूनता** नहीं रहती है और साथ ही सभी स्वरूपों में व्यक्ति **वैभवशाली** बन सकता है।

श्री युक्त त्रिपुराम्बा नव शक्ति चेतना प्राप्ति दीक्षा न्यौछावर ₹1800/-